# भारत में लोक - कल्याण एवं नवउदारवाद का अंत्योदय वर्ग पर प्रभाव : मथुरा जनपद के विशेष सन्दर्भ में (वर्ष 2004 – 2024 तक )

राजनीति विज्ञान में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा


शोधकत्री

**नेहा द्विवेदी**

शोध निर्देशक

**डॉ गोपाल कृष्ण परिहार**

**समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय**
**दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)**
**दयालबाग, आगरा - 282 005**


**2024**

**प्रस्तावना**

वैश्वीकरण के दौर में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का महत्व वर्तमान समय में अकादमिक जगत में दिन - प्रतिदिन प्रासंगिक हो रहा है। कल्याणकारी राज्य का मुख्य उद्देश्य समाज के उपेक्षित वर्ग को कुछ विशेष सुविधाएं उपलब्ध करवाना है, जिससे यह वर्ग भी विकास की मुख्यधारा में शामिल होकर सम्मानपूर्वक एवं गरिमापूर्ण जीवन यापन कर सके। 15वीं एवं 16वीं शताब्दी में चिरसम्मत उदारवाद का जन्म हुआ और उसने उस दौर में स्वतंत्रता, समानता, न्याय के जो स्वप्न दिखाए, बीसवीं शताब्दी में वह एक सीमा तक ही पूर्ण हो पाए, क्योंकि चिरसम्मत उदारवाद राज्य के सीमित कार्यों का समर्थन करता था। इसी समय चिरसम्मत उदारवाद को मार्क्सवाद, विभिन्न सामाजिक आंदोलनों द्वारा चुनौतियां दी गई परिणामस्वरूप चिरसम्मत उदारवाद ने अपने प्रकृति में परिवर्तन किया। आधुनिक उदारवाद राज्य के न्यूनतम हस्तक्षेप की अपेक्षा राज्य के हस्तक्षेप को एक सीमा तक न्यायोचित मानता है, क्योंकि आधुनिक उदारवाद इस अवधारणा में विश्वास करता है कि जीवन जीने का अधिकार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जिसे बनाए रखने का उत्तरदायित्व राज्य का है। इस संदर्भ में आधुनिक उदारवाद कल्याणकारी राज्य का समर्थन करता है। कल्याणकारी राज्य के परिणामस्वरूप राज्य का कार्यक्षेत्र शनै - शनै विस्तारित होता गया और व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित होती गई, परन्तु सन् 1990 के दशक में पूर्व सोवियत संघ विघटन, शीत युद्ध की समाप्ति, विश्व का एकध्रुवीय व्यवस्था की ओर अग्रसर इत्यादि कारणों ने नव उदारवाद को उदित होने में अपना योगदान दिया। नव उदारवादी विचारधारा एक बार पुनः व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना चाहती है और राज्य के कार्यक्षेत्र को न्यूनतम करना चाहती है तथा राज्य को अपने परंपरागत कार्यों की ओर पुनः वापस जाने पर बल देती हैं (Aachary, 2011: 236-238)।

एक कल्याणकारी राज्य का उदय इस राजनीतिक दर्शन से होता है कि राज्य का उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उत्थान कर वंचित वर्ग के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की व्यवस्था करना है। इसके लिए सरकार के अधिक से अधिक हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। इस प्रकार कल्याणकारी राज्य पूंजीवाद एवं समाजवाद के मध्य समन्वय कर मध्यम मार्ग का अनुसरण करता है। वैश्विक पटल पर कल्याणकारी राज्य का उदय चिरसम्मत उदारवाद

में पाई जाने वाली न्यूनताओं जैसे आर्थिक विषमता, व्यक्तिवाद की पराकाष्ठा, शोषण, मशीनीकरण का परिणाम था। आधुनिक समय में कल्याणकारी राज्य का उदय सर विलियम बेवरेज की रिपोर्ट (Social Insurance and Allied Services 1942) के साथ माना जाता है, जिसका उद्देश्य समाज की पांच बड़ी बुराइयों(अभाव, रोग, अज्ञानत, मलिनता और आलस्य) को समाप्त कर एक सामाजिक बीमा की व्यवस्था करना था (Whiteside, 2014: 1)। जब हम कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को भारतीय संदर्भ में देखते हैं तो यह एक नवीन अवधारणा प्रतीत नहीं होती है। इस अवधारणा के साक्ष्य भारतीय इतिहास में भी देखे जा सकते हैं। तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम राज्य का वर्णन करते हुए कहा "नहिं दरिद्र कोउ दुखी ना दीना, नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना," भावार्थ: राम राज्य में कोई व्यक्ति ना ही दरिद्र होगा, ना ही दुर्भाग्यशाली होगा, ना ही बुद्धिहीन होगा। (Swaraj, 2020: 149)। महाभारत के शांति पर्व में राज्य के व्यापक कार्य क्षेत्र की परिचर्चा करते हुए कहा गया - राजा को किसी भी प्रकार की शिथिलता का त्याग कर और धर्म के अनुरूप राज्य का शासन करने के साथ - साथ धर्म के अनुरूप करों की वसूली के माध्यम से कल्याण की व्यवस्था करनी चाहिए। कौटिल्य अर्थशास्त्र में राज्य के कल्याणकारी स्वरूप का समर्थन करते है। कौटिल्य की अवधारणा अपने स्वरूप में समग्र थी, जिसमें कल्याण की सामाजिक जिम्मेदारी ना केवल व्यक्ति, समाज के लिए बल्कि संपूर्ण मानवता, प्रकृति, ब्रह्मांड के लिए थी, यही कारण है कि कौटिल्य कहते हैं कि प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है (Gauba, 2018: 43)। इस प्रकार भारतीय संस्कृति एवं समाज में प्राचीन समय से ही कल्याणकारी राज्य के तत्व निहित हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने अपनी परंपरागत नीति का अनुसरण करते हुए भारतीय संविधान के भाग 4 में नीति निदेशक तत्व की व्यवस्था की, जिसका लक्ष्य सामाजिक एवं आर्थिक समानता तथा लोकतंत्र की प्राप्ति करना है। इस प्रकार राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत हमारे संपूर्ण स्वतंत्रता आन्दोलन, आदर्शों, आकांक्षाओ, भावनाओं एवं उपदेशों के प्रतीक हैं तथा वे आदर्श और वास्तविकता के बीच एक समन्वय का प्रतिनिधित्व करते हैं। जनकल्याण का विचार भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं मौलिक अधिकार में भी परिलक्षित होते है (Laxmikant, 2019: 81)।

15 अगस्त 1947 को जब भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी उस समय अर्थव्यवस्था के प्रमुख दो प्रारूप विद्यमान थे- एक पूंजीवादी प्रारूप दूसरा समाजवादी प्रारूप, परंतु भारत सरकार द्वारा भारत के लिए एक मिश्रित प्रारूप को अपनाया गया जिसमें निजी क्षेत्र व सार्वजनिक क्षेत्र दोनों को ही महत्व दिया गया। इस प्रकार भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था का अनुसरण किया, परंतु वास्तविक रूप में भारत की प्रवृत्ति समाजवादी व्यवस्था की ओर अधिक थी, जिसका प्रमुख कारण भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का समाजवादी व्यवस्था में अति विश्वास एवं सोवियत संघ से मित्रता का भाव होना था। इस प्रवृत्ति के पीछे भारत की तत्कालीन परिस्थिति भी उत्तरदायी थी, जिसमें गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, खाद्यान्न आपूर्ति, आर्थिक विषमता जैसी समस्याएं विद्यमान थी। भारत सरकार द्वारा इस असंतुलित व्यवस्था को संतुलित करने के उद्देश्य से समाजवादी नीति का अनुसरण किया। यही कारण है कि तब से लेकर आज तक भारतीय संघ एवं राज्य द्वारा विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं, कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। भारत को जहां एक ओर अपने कल्याणकारी स्वरूप के सकारात्मक परिणाम देखने को मिले है, वहीं दूसरी ओर नकारात्मक परिणाम भी परिलक्षित होते है। यह नकारात्मक परिणाम सर्वाधिक आर्थिक क्षेत्र में प्रतीत हुए जैसे- आर्थिक विकास की धीमी गति, लाइसेंस राज के दुष्परिणाम, 1962 भारत चीन युद्ध में खाद्यान्न आपूर्ति इत्यादि यही कारण है कि भारत को अपने आर्थिक मॉडल में परिवर्तन करने की आवश्यकता अनुभव हुई, तत्पश्चात भारत ने कल्याणकारी नीतियों के साथ नव उदारवादी नीतियों को समाहित किया। नव उदारवाद वह विचारधारा है जो 1990 के दशक में इस तर्क के साथ प्रस्तुत की गई कि समकालीन विश्व में अहस्तक्षेप की नीति को पुनः लागू करने की आवश्यकता है, क्योंकि यह कल्याणकारी राज्य को आर्थिक विकास में बाधक मानता है। नव उदारवाद के पक्षधर राज्य के दूर - दूर फैले हुए कार्यक्षेत्र को फिर से समेटने (Rolling back the State) का समर्थन करते हैं (Heywood, 2007: 61)। वैश्विक पटल पर नव उदारवादी विचारधारा के उदय के लिए कई कारण उत्तरदायी रहे जैसे सोवियत संघ का विघटन, साम्यवाद की विचारधारा का ह्रास साथ ही साथ तृतीय विश्व के अनुभव से यह सिद्ध हो गया कि

आर्थिक गतिविधियों पर राज्य का नियंत्रण प्रशासनिक अकुशलता, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। अतः एक आर्थिक, राजनीतिक विचारधारा के रूप मे नव उदारवाद समकालीन विश्व में अस्तित्व मे आया।

नव उदारवाद उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण जैसी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देता है। 1990 के दशक में भारतीय कल्याणकारी राज्य पर इस विचारधारा का प्रभाव देखने को मिलता है परिणामस्वरूप भारत सरकार द्वारा नए आर्थिक सुधारों की घोषणा की गई जिसे नई आर्थिक नीति या आम तौर पर एल.पी.जी सुधार के नाम से भी जाना जाता है। भारत सरकार द्वारा एल.पी.जी (लिबरलाइजेशन, प्राइवेटाइजेशन एंड ग्लोबलाइजेशन) को अपनाने के पीछे कई कारण उत्तरदायी थे जैसे- सरकार का राजस्व से अधिक व्यय, राजनीतिक उथल - पुथल, मुद्रास्फीति में वृद्धि आयात में वृद्धि, निर्यात में शिथिलता, भुगतान असंतुलन, अंतराष्ट्रीय ऋण चुकाने हेतु विदेशी मुद्रा का अभाव इत्यादि। इन आर्थिक कारणों के अतिरिक्त कुछ अंतराष्ट्रीय कारण भी उत्तरदायी थे जैसे- सोवियत संघ का विघटन, तेल संकट, 1990 - 91 इराक युद्ध, बी.ओ.पी के मुद्दे से निपटने हेतु अंतराष्ट्रीय  मुद्रा कोष से बड़ी राशि उधार लेना, 2003 में इराक पर आक्रमण के लिए बनाए गए विशाल वैश्विक अनिश्चितता। इस प्रकार उपयुक्त कारणों द्वारा पुनर्निर्माण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैंक एवं अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष से सशर्त मदद लेने के कारण भारत ने एल.पी.जी कार्यक्रम को अपनाया (Economic Times, 2019)। इस विषय पर यदि वर्तमान सरकार की परिचिर्चा की जाए तो जहां एक ओर संघ सरकार का झुकाव कल्याणकारी कार्य जैसे जन धन योजना, अटल पेंशन योजना, स्टैंड अप इंडिया, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में देखने को मिलता है, वही विगत वर्षों में सरकार का झुकाव नव उदारवादी व्यवस्था की ओर देखने को मिल रहा है। इसी क्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गैर रणनीतिक सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण का जोरदार तरीके से समर्थन करते हुए कहा कि “व्यवसाय करना सरकार का काम नहीं है” (Navbharat Times, 2021)। हाल ही में कई क्षेत्रों का निजीकरण चर्चाओं में है जैसे बैंक, रेलवे, भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, एयर इंडिया, शिपिंग कॉरपोरेशनऑफ इंडिया इत्यादि।

अंत्योदय समाज का एक ऐसा वर्ग है जिसे वर्तमान समय में विकास की अति आवश्यकता है, यह समाज गरीबी रेखा

के नीचे जीवन व्यापन कर रहे व्यक्तियों से भी निम्न स्थिति रखता है। देश के चतुर्मुखी विकास हेतु आवश्यकता इस बात की है कि समाज के इस वर्ग को भी विकास की धारा से जोड़ा जाए, यही कारण है कि केंद्र सरकार द्वारा वर्तमान समय में अंत्योदय वर्ग के कल्याण हेतु, उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कई योजनाओं ,परियोजनाओं का संचालन किया जा रहा है। इन योजनाओं में से एक प्रमुख योजना अंत्योदय अन्न योजना भी है। अंत्योदय अन्न योजना में गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रहे लोगों के परिवारों को लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तरह पहचान के तौर पर अंत्योदय राशन कार्ड प्रदान किया जाता है। इस योजना में 2 रूपये प्रति किलो में गेहूँ तथा 3 रूपये प्रति किलो चावल का वितरण किया जाता है। पूर्व में प्रत्येक माह 25 किलो प्रति परिवार को वितरण किया जाता था लेकिन अब 1 अप्रैल 2002 से 35 किलो प्रति परिवार कर दिया गया है। अंत्योदय अन्न योजना का प्रारंभ 25 दिसंबर सन् 2000 में केंद्र सरकार के खाद्य आपूर्ति और उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के माध्यम किया गया था (https://fcs.up.gov.in/)।

**सैद्धांतिक पृष्ठभूमि**

उदारवाद राजनीतिक दर्शन का एक महत्वपूर्ण संप्रदाय है, जिसका प्रारंभ सोलहवीं शताब्दी के अंतिम चरण में हुआ परन्तु यह एक विचारधारा के रूप में सत्रहवीं शताब्दी में स्थापित हुआ (Ball & Dagger, 2014: 44)। उदारवाद विभिन्न परिवर्तनों के साथ आज भी वैश्विक पटल पर एक महत्वपूर्ण राजनीतिक विचारधारा के रूप में स्थापित है, इसके परिवर्तनशील स्वरूप के परिणाम स्वरूप इसके तीन प्रमुख रूप हुए जिसे चिरसम्मत उदारवाद, आधुनिक उदारवाद, नवउदारवाद के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। उदारवादी विचारधारा के उत्पत्ति के लिए कई कारण उत्तरदायी हैं जैसे- पुनर्जागरण आंदोलन, धर्म सुधार आंदोलन, वैज्ञानिक क्रांति, औद्योगिक क्रांति इत्यादि। (Johri, 2007: 707)। उदारवाद एक राजनीतिक एवं नैतिक दर्शन है जो व्यक्ति के अधिकार, स्वतंत्रता, शासित की सहमति, राजनीतिक समानता और कानून के समक्ष समानता पर आधारित है। उदारवाद का मानना है कि मनुष्य एक तार्किक प्राणी है तथा अपने जीवन के संबंध में सर्वश्रेष्ठ निर्णय स्वयं ही ले सकता है। व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामाजिक हितों में

कोई अंतर्विरोध नहीं है। व्यक्तिगत हित की साधना से ही व्यक्ति सामाजिक हित में सहायक होता है। प्रत्येक व्यक्ति को कुछ प्राकृतिक अधिकार प्राकृतिक रूप से ही प्राप्त हैं, जिसमें स्वतंत्रता का अधिकार, जीवन का अधिकार, व्यक्तिगत संपत्ति का अधिकार प्रमुख है। नैतिक जीवन में यह सिद्धांत व्यक्तिवाद का समर्थन करता है, जिसमें व्यक्ति की गरिमा, उसके स्वतंत्र अस्तित्व, निर्णय क्षमता को मान्यता देते हुए ऐसी सामाजिक और कानूनी व्यवस्था का समर्थन करता है जो व्यक्तियों के स्वैच्छिक लेनदेन पर आधारित है। आर्थिक जीवन में यह सिद्धांत राज्य की न्यूनतम हस्तक्षेप या अहस्तक्षेप का समर्थन करता है, जो अंततः पूंजीवाद को बढ़ावा देता है।

पूंजीवाद के अंतर्गत उत्पादन, वितरण और विनिमय के प्रमुख साधन निजी स्वामित्व में रहते हैं राज्य के स्वामित्व में नहीं (Gauba, 2018: 27)। उदारवाद की दृष्टि में यह व्यवस्था समाज के सब व्यक्तियों के लिए हितकर होती है। इस प्रकार चिरसम्मत उदारवाद का उद्देश्य पूंजीवादी व्यवस्था का संरक्षण एवं संवर्धन करना है। उदारवाद के प्रमुख समर्थकों में थॉमस हॉब्स, जॉन लॉक, एडम स्मिथ, डेविड रिकार्डो, थॉमस रॉबर्ट माल्थस, हरबर्ट स्पेंसर, जेरेमी बेंथम के नाम शामिल है (Vincent, 2010: 27)। हॉब्स के राजनीतिक चिंतन का केन्द्र व्यक्ति है। वह व्यक्तियों को प्राकृतिक दशा की अराजकता से निकालकर सभ्य जीवन की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है, ताकि वह उत्तम जीवन की प्राप्ति कर सकें। हॉब्स का राज्य अपने आप में साध्य नहीं बल्कि व्यक्ति के साध्य का साधन है। आत्मसंरक्षण का अधिकार यह स्पष्ट करता है कि हॉब्स के विचारों में उदारवाद के विचार परिलक्षित होते है अतः हॉब्स का राज्य-सिद्धांत आरंभ से अंत तक व्यक्तिवादी सिद्धान्त है (Sharma, 2001: 540)।

जॉन लॉक उदारवाद के जनक माने जाते है। वाहन के शब्दों में “लॉक की प्रणाली में प्रत्येक चीज का आधार व्यक्ति है, प्रत्येक व्याख्या का उद्देश्य व्यक्ति की प्रभुता को सुरक्षित रखना है।” उपयुक्त विचारों के आधार पर जॉन लॉक को उदारवाद के जनक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है- राज्य के निर्माण का उद्देश्य व्यक्तियों के अधिकारों की सुरक्षा करना है,व्यक्ति के पक्ष में राज्य पर सीमाएं, यही कारण है कि मैक्सी कहते हैं लॉक का कार्य “राज्यसत्ता की स्थिति को उच्चतर बनाना नहीं, अपितु उसकी मर्यादाओं का उल्लेख करना है” (Maxey, 1938: 255)। व्यक्ति द्वारा

राज्य का विरोध, व्यक्ति की धार्मिक स्वतंत्रता इत्यादि (Sharma , 1997: 573)।

चिरसम्मत उदारवाद ने अपनी स्थापना के समय व्यक्तियों को जो स्वप्न दिखाए उन्हें वह पूर्णतः पूर्ण करने में असमर्थ रहा। चिरसम्मत उदारवाद की स्थापना के पश्चात समाज में आर्थिक असमानता, शोषण, गरीबी, भुखमरी इत्यादि की स्थापना हो गई। उल्लेखनीय है कि चिरसम्मत उदारवाद समानता पर प्रमुख रूप से बल देता है, लेकिन समाज का स्वरूप असमान था। इसके साथ ही साथ वैचारिक स्तर पर भी मुख्य रूप से चिरसम्मत उदारवाद को चुनौती दी गई और यह चुनौती उसे मार्क्सवाद के रूप में दी गई। जहां एक ओर चिरसम्मत उदारवाद पूंजीवादी व्यवस्था का प्रबल समर्थक और इस व्यवस्था को बनाए रखने की वकालत करता था, वही मार्क्सवादी दर्शन का उद्देश्य उस पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत पाए जाने वाले न्यूनताओ से विश्व को अवगत कराना था। मार्क्स के अनुसार पूंजीवाद शोषण, अलगाव, आर्थिक विषमता, पूंजीवाद के प्रभुत्व को बनाए रखने की प्रणाली है। इस प्रकार राज्य कृत्रिम, वर्गीय, शोषणकारी यंत्र है। इस प्रकार जब चिरसम्मत उदारवाद को मार्क्सवाद के रूप में चुनौती दी गई तो चिरसम्मत उदारवाद ने अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु अपने स्वरूप में परिवर्तन कर लिया जैसे- राज्य की भूमिका में वृद्धि, आर्थिक क्षेत्र में सीमित हस्तक्षेप का समर्थन इस प्रकार चिरसम्मत उदारवाद की कमियों आर्थिक विषमता, व्यक्तिवाद की पराकाष्ठा, शोषण, मशीनीकरण ने आधुनिक उदारवाद को जन्म दिया (Johri, 2007: 722)।

आधुनिक उदारवाद वह विचारधारा है जो मुक्त बाजार पूंजीवाद के प्रतिरोध में एक प्रतिक्रिया के रूप में उभरा। यह विश्वास करते हुए की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अर्थ अकेले छोड़ दिये जाने रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार व्यक्ति की स्वतंत्रता को सार्थक बनाने के लिए राज्य की सकारात्मक भूमिका पर बल दिया गया, जिससे कल्याणकारी राज्य का उदय हुआ। कल्याणकारी राज्य वह प्रतिरूप है जो मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था को इस ढंग से विनियमित करता है जिससे उपेक्षित वर्ग को सहायता पहुंचाई जा सके। कल्याणकारी राज्य के तीन प्रमुख सिद्धांत विद्यमान है प्रकार्यवादी समाजशास्त्रीय सिद्धांत, सरकारी नीति के आर्थिक सिद्धांत और लोकतंत्र की बहुलवादी सिद्धांत (Gough, 2015: 28)। आधुनिक उदारवाद के समर्थकों में प्रमुख रूप से में जे. एस. मिल, टी. एच. ग्रीन, एच. लास्की जैसे विचारक सामने आए, जिन्होंने आधुनिक उदारवाद एवं कल्याणकारी राज्य का समर्थन किया (Bellamy,

2003: 32)। मिल ने प्रारंभिक दौर में अहस्तक्षेप और व्यक्तिवाद की नीति का समर्थन किया परंतु सामाजिक-आर्थिक यथार्थ पर विचार करने के बाद उसने इसमें संशोधन कर दिया। मिल ने राजनीतिक क्षेत्र में प्रतिनिधि शासन का समर्थन किया वहीं आर्थिक क्षेत्र में उसने कल्याणकारी राज्य के विचार को बढ़ावा दिया।व्यक्ति की 'स्व विषयक' एवं 'पर विषयक' गतिविधियों में अंतर करते हुए 'पर विषयक' गतिविधियों पर राज्य के उचित हस्तक्षेप की अनुमति दी।अपनी प्रसिद्ध कृति 'प्रिंसिपल ऑफ पॉलीटिकल इकोनामी' के प्रथम संस्करण (1848) के अंतर्गत मिल ने समाजवाद की आलोचना की थी, परंतु इसके अंतिम संस्करण (1866) में उसने अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन किया और संपत्ति के अधिकार को सीमित करने की वकालत की। मिल ने लिखा कि प्रबुद्ध सामाजिक नीति ऐसी व्यवस्था को बढ़ावा देगी जिसमें समुदाय के प्रत्येक सदस्य को संपत्ति का स्वामित्व प्राप्त हो सके। उसने भू संपत्ति के अधिकार पर विशेष रूप से प्रहार किया (Heywood, 2007: 256-258)।

ग्रीन ने इस तर्क को नकारात्मक और सकारात्मक स्वतंत्रता के बीच अंतर के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, एक अर्थ है, जिसमें स्वतंत्रता केवल संयम की अनुपस्थिति है, लेकिन इसका एक सकारात्मक आयाम भी है, एक ऐसा अर्थ जिसमें स्वतंत्रता सकारात्मक शक्ति या कुछ करने की क्षमता है (Sharma & Sharma, 1997: 129)।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात सन 1950 से 1970 के दशक तक लोक कल्याणकारी अवधारणा बहुत लोकप्रिय हुई, किंतु 1970 के दशक में इस व्यवस्था में भी कमियां दिखाई देने लगी जैसे- व्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन, राज्य द्वारा बाध्यकारी शक्ति का प्रयोग, नौकरशाही की समस्या, पूंजीवाद एवं समाजवाद का मिश्रण होने के नाते वैचारिक संघर्ष की समस्या। इस प्रकार इन समस्त कारकों ने नव उदारवाद की अवधारणा को प्रोत्साहित किया। इस दशक के अंतिम वर्षों में पूर्वी यूरोप की समाजवादी अर्थव्यवस्था में जो संकट पैदा हुआ उसके अनुभव से इस दृष्टिकोण को और भी बल मिला।। नव उदारवाद द्वारा प्रमुख तर्क यह प्रस्तुत किया गया कि समकालीन विश्व में 'अहस्तक्षेप की नीति' को लागू करने की आवश्यकता है, क्योंकि यह कल्याणकारी राज्य को आर्थिक विकास में बाधक मानता है। इसमें समाज के प्रतिभाशाली कर्मठ वर्गों पर भारी कर लगाकर अयोग्य और अकर्मण्य व्यक्तियों का पोषण किया जाता है। नव उदारवाद के पक्षधर राज्य के दूर-दूर तक फैले हुए कार्यक्षेत्र को फिर से समेटने का समर्थन करते हैं। नव उदारवाद का दार्शनिक आधार एफ ए हेयक, मिल्टन फ्रीडमैन, अइजिया बर्लिन, रॉबर्ट नोजिक के चिंतन से मिलता है (Acharya,

2011: 238)। समकालीन विश्व में नव उदारवाद उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण की प्रवृत्तियों को बढ़ावा देता है। उदारीकरण एक व्यापक शब्द है जो सामान्य रूप से कुछ सरकारी नियमों या प्रतिबंधों को खत्म करने के अर्थ में कानूनों प्रणालियों या विचारों को कम गंभीर बनाने के अभ्यास को संदर्भित करता है। निजीकरण एक सरकार से निजी स्वामित्व वाले संस्था को संपत्ति या व्यवसाय के स्वामित्व के हस्तांतरण को संदर्भित करता है। वैश्वीकरण आर्थिक गतिविधियों के विस्तार को संदर्भित करता है एवं राष्ट्रीय राज्य की राजनीतिक सीमाओं को पार करता है (Dutt & Mahajan, 2016: 224-249)।

वैश्वीकरण शब्द का अर्थ विश्व में पारस्परिक संबद्धता के दायरे का विस्तार की भावना है। वैश्वीकरण से अभिप्राय विश्व के समस्त संसाधनों, ज्ञान, जनशक्ति, सुविधाओं, बाजारों और सेवाओं आदि को विश्व के सभी लोगों को निर्बाध रूप से उपलब्ध करवाना है। विश्व के समस्त देशों का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक मेलमिलाप और व्यक्ति, वस्तु, विचार, पूंजी का एक देश से दूसरे देश में मुक्त प्रभाव ही वैश्वीकरण है।

20वीं शताब्दी के अंतिम दशक में एक परिवार, एक राज्य, एक विश्व की भावना का विकास हुआ है। विश्व एकीकरण की यह भावना ही वैश्वीकरण कहलाती है। वैश्वीकरण  की नीति को  सन् 1980 के दशक से अधिक लोकप्रियता मिली है। वैश्वीकरण के अंतर्गत संपूर्ण विश्व को एक 'भूमंडलीय गांव' के रूप में देखा जाता है। वैश्वीकरण की नीति उदारीकरण और निजीकरण के तार्किक परिणाम को व्यक्त करती है (Suthar, 2022: 195)।

**समस्या कथन**

युद्धोत्तर पूंजीवादी लोकतंत्रों में सबसे महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तनों में से एक कल्याणकारी राज्यों का उदय रहा है। कल्याणकारी राज्य वह प्रतिरूप है, जो मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था को इस प्रकार विनियमित करता है, जिससे समाज के उपेक्षित वर्गों को सहायता पहुंचाई जा सके। विकासवाद की गतिमान चरों के कारण नव उदारवाद की अवधारणा का संश्लेषण भी भारतीय राजनीतिक पटल पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है, जिसमें कि कल्याणवाद एवं राज्य के न्यूनतम हस्तक्षेप की बहस निरंतर अकादमिक स्तर पर दृष्टिगोचर हो रही है। इसके अंतर्गत पूंजीवाद बनाम कल्याणवाद से उत्पन्न असमानता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसके अंतर्गत एक तरफ राज्यों पर असमानता

को कम करने का दबाव है, वही दूसरी तरफ वैश्विक स्तर पर राज्यों के कार्यों को सीमित करने का दबाव अप्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित हो रहा है। इस संदर्भ में अध्ययन की समस्या यह नजर आती है कि इस विरोधाभासी स्थिति में समाज कल्याण की धारणा को, असमानता को कम करने के, परिपेक्ष्य में किस प्रकार से साकार किया जाए तथा नवउदारवाद, भारत में विषमता को किस रूप में देखती है। प्रस्तुत अध्ययन में अंत्योदय योजना के लाभार्थियों के माध्यम से लोक कल्याण एवं नव उदारवाद के अंतरसंबंधो को ज्ञात करने का प्रयास किया जाएगा। इसलिए अध्ययन के विषय के रूप में "भारत में लोक कल्याण एवं नवउदारवाद का अंत्योदय वर्ग पर प्रभाव : मथुरा जनपद के विशेष संदर्भ में (वर्ष 2004 से 2024 तक)" का चयन किया जाएगा।

**साहित्यिक पुनरावलोकन**

साहित्यिक पुनरावलोकन को प्रमुख रूप से तीन भागों में विभाजित किया गया है, उदारवाद, कल्याणकारी राज्य एवं नवउदारवाद। तथा प्रत्येक भाग को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय भाग में विभाजित किया गया है।

**बर्लिन (1958)** लेखक ने प्रस्तुत लेख में तुलनात्मक एवं विवरणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वतंत्रता के मध्य अंतर स्पष्ट किया है। अपनी कृति 'टू कांसेप्ट ऑफ लिबर्टी' में लेखक ने यह तर्क दिया कि राज्य केवल व्यक्तियों के नकारात्मक स्वतंत्रता की रक्षा कर सकता है अतः राज्य का सकारात्मक स्वतंत्रता से कोई सरोकार नहीं है। यदि एक व्यक्ति किसी स्वतंत्रता का उपयोग करने में असक्षम है, तो यह उसकी अपनी असमर्थता का प्रतिबिंब है (Two Concepts of Liberty, 1958: 17-29)। इस प्रकार लेखक ने राज्य के सीमित कार्यक्षेत्र को बढ़ावा देते हुए नव उदारवाद की अवधारणा को प्रोत्साहित किया है।

**फ्रीडमैन (1962)** विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक ने अपनी कृति में नव उदारवाद की अवधारणा को स्पष्ट किया और यह तर्क प्रस्तुत किया कि, आर्थिक स्वतंत्रता एवं राजनीतिक स्वतंत्रता के बीच कैसा सम्बन्ध होना चाहिए? लेखक ने आर्थिक स्वतंत्रता को आवश्यक स्वतंत्रता के रूप में परिभाषित किया है एवं राजनीतिक स्वतंत्रता को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में बढ़ावा दिया है। लेखक के अनुसार आर्थिक क्षेत्र में सरकार का हस्तक्षेप, आर्थिक क्षेत्र में असंतोष को बढ़ावा देता है, इस प्रकार सरकार का आर्थिक क्षेत्र में कम से कम हस्तक्षेप होना चाहिए।

**लासर्डो (2011)** लेखक ने अपनी कृति "Liberalism: A Counter – History" में 18 वीं से लेकर 20 वीं शताब्दी तक चलने वाले एक बौद्धिक इतिहास का वर्णन करते हुए जॉन लॉक, बर्क, टाकविले, बेंथम जैसे प्रमुख उदारवादी लेखकों के विचारों का विश्लेषण किया। जो एक बौद्धिक स्थिति के आंतरिक विरोधाभासों को प्रकट करता है। उदारवाद का दासता, उपनिवेशवाद, नस्लवाद के साथ पारस्परिक संबंधों की भी परिचर्चा लेखक ने इस कृति में की है।

**डेविस (2014)** लेखक अपने लेख "The Limits of Neoliberalism: Authority, Sovereignty and the Logic of Competition" में यह प्रश्न करते है कि आर्थिक तर्कसंगतता और राजनीतिक सत्ता के बीच क्या संबंध है? किस आधार पर एक नव उदारवादी राज्य अपने अधिकार को वैध बनाता है? यह देखते हुए कि नव उदारवादी आलोचना औचित्य के लिए पर्याप्त राजनीतिक आधार को नष्ट कर देती है। इस प्रकार विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक ने यह विचार दिया कि नव उदारवाद स्पष्ट रूप से उस हद तक एकीकृत सिद्धांत नहीं है, जिस हद तक केनेसियनवाद है। लिमिट्स ऑफ नियोलिबरलिज्म में लेखक का तर्क है कि नवउदारवादी विचार के विभिन्न पहलुओं की विविधता के बावजूद, उन सभी में 'राजनीतिक निर्णय को आर्थिक मूल्यांकन के साथ परिवर्तित करने का प्रयास है, जिसमें विशेष रूप से बाजार द्वारा पेश किए गए मूल्यांकन शामिल नहीं हैं'। नवउदारवाद जीवन के उन क्षेत्रों में आर्थिक तकनीकों का विस्तार करके राजनीति को अर्थशास्त्र से 'विमुख' कर देता है, जो बाज़ार के रूप में संगठित नहीं हैं, न ही मूल्य और मूल्य के आर्थिक विचारों द्वारा शासित हैं।

**लेफेब्र (2022)** विवरणात्मक विधि का प्रयोग कर प्रस्तुत लेख "Liberalism and the Good Life" जिसमें लेखक समकालीन राजनीतिक दार्शनिक प्राय: इस धारणा से असहज होते हैं कि उदारवाद से उच्च जीवन की अवधारणा विकसित की जा सकती है। लेखक के अनुसार उदारवादी विचाराधारा को बहुलवादी विचाराधारा के सम्मान में तटस्थ रहना आवश्यक है। यह लेख उदार मूल्यों और संवेदनाओं से उच्च जीवन की अवधारणा विकसित करने का प्रयास करता है,फिर भी बहुलवाद का सम्मान करने से पीछे नहीं हटता। यह प्रारम्भिक और समकालीन उदारवादियों के साथ - साथ लोकप्रिय संस्कृति को आकर्षित करता है।

**लिंडबेक (2006)** यह शोध पत्र आधुनिक कल्याणकारी राज्य के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं औचित्य और राजनीतिक ताकतों की संक्षिप्त चर्चा के साथ प्रारंभ होता है। आर्थिक दक्षता और पुनर्वितरण के संदर्भ में अपनी प्रमुख उपलब्धियों

का सारांश भी देता है। विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग करते हुये लेखक ने प्रस्तुत लेख में समकालीन कल्याणकारी राज्य व्यवस्थाओं की कुछ प्रमुख समस्याओं की पहचान करने का भी प्रयास किया है।

**बार (2012)** प्रस्तुत लेख मे लेखक द्वारा कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का स्पष्टीकरण करते हुए उसके विभिन्न दृष्टिकोण, उद्देश्य, चुनौतियों का वर्णन प्रस्तुत किया है। तुलनात्मक एवं विवरणात्मक विधियों का प्रयोग कर लेखक ने कल्याणकारी राज्य एवं अर्थव्यवस्था के बीच पाए जाने वाले संबंधों पर परिचर्चा प्रस्तुत की है।

**वेगनर एवं गेरहार्ड (2015)** प्रस्तुत लेख में विवरणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक द्वारा स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार कल्याणकारी राज्य की वैधता वर्तमान वाद विवाद का विषय बन चुका है। लेखक के अनुसार वैश्विक दृष्टिकोण से यह किसी भी प्रकार से ऐसा प्रतीत नही होता है कि यह आधुनिक युग में आगे बढ़ने के विकल्प का प्रतिनिधित्व करता है। कुछ क्लासिक कल्याणकारी राज्य जैसे- यूनाइटेड किंगडम पहले से ही इस मार्ग का अनुसरण करने से दूर हो गए हैं यानी कल्याणकारी राज्य लगातार परिर्वतन के दौर से गुजर रहा है।

**संखधर (2003)** प्रस्तुत पुस्तक के केंद्र में कल्याणकारी राज्य का भारतीय मॉडल है। विवरणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए प्रस्तुत पुस्तक में लेखक निम्नलिखित कारकों का अध्ययन करता है- कल्याणकारी राज्य का ब्रिटिश दृश्य, फेबियन समाजवाद और कल्याणकारी राज्यवाद, लाइसेज फेयर फाउंडेशन ऑफ द वेलफेयर स्टेट (1889), स्थानीय स्वशासन का भारतीय मॉडल, कल्याणकारी राज्यों में संकट चेतावनी के संकेत। इस प्रकार यह पुस्तक कल्याणकारी राज्य के ऐतिहासिक, वर्तमान और भविष्य की पृष्ठभूमि की परिचर्चा से संबंधित एक महत्वपूर्ण कृति है।

**भल्ला (2014)** प्रस्तुत लेख भारतीय कल्याणकारी राज्य के विघटन से संबंधित है। विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग कर लेखक तर्क देता है कि भारत की कल्याण प्रणाली को एक नई दृष्टि प्रदान करने की आवश्यकता है। भारत के नए प्रशासन के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह देश की मौजूदा नीतियों की प्रभावकारिता का सावधानीपूर्वक परीक्षण करें और व्यक्तिगत उत्पादकता बढ़ाकर गरीबी का स्तर कम करने वाली नई नीतियों का निर्माण करें।इस प्रकार यह लेख भारत में **कल्याण व्यवस्था** पर पुनर्विचार जैसी अवधारणाओं के विश्लेषण पर आधारित है।

**शुक्ला (2020)** विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक अपने लेख इंडिया एस ए वेलफेयर स्टेट में कल्याणकारी राज्य का सामान्य अर्थ स्पष्ट करते है एवं कल्याणकारी राज्य एवं समाजवाद के बीच सहसंबंध की परिचर्चा प्रस्तुत करते है। यह लेख भारत में कल्याणकारी राज्य के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए, प्रमुख अनुच्छेद एवं

भारत सरकार की प्रमुख योजना, परियोजना से संबंधित है। इस लेख में कल्याणकारी राज्य एवं उदारवाद पर भी विचार प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्ष के रूप में, भारत में प्रतिवर्ष विभिन्न योजनाओं को प्रारंभ किया जाता है, बजट का एक बड़ा भाग गरीबी उन्मूलन, समानता लाने और सुरक्षा प्रदान करने पर केंद्रित है, परंतु इस मार्ग में अनुचित क्रियान्वयन,भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है। इस प्रकार इस लेख में कल्याणकारी योजनाओं का गहनता से अध्ययन किया गया है।

**स्वराज (2020)** विवरणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक प्रस्तुत शोध पत्र में प्रमुख रूप से त्रेता युग में स्थापित हिंदू के सबसे महान काव्य रामायण के समय प्रचलित शासन प्रणाली, सार्वजनिक नीति, प्रशासन, राजनैतिक मूल्य, रामराज्य, राजा के कर्तव्य, केंद्र प्रशासन, राजस्व, न्याय और कानून, सर्वोच्च न्यायालय अर्थात न्याय प्रणाली आदि विषयों का अध्ययन किया है।साथ ही साथ रामायण में वर्णित व्यवस्था का समकालीन लोक नीति एवं वर्तमान प्रशासन में क्या प्रासंगिकता है इसका भी अध्ययन किया है।

**दुग्गीराला (2021)** व्याख्यात्मक, तुलनात्मक विधि का प्रयोग करते हुए प्रस्तुत लेख "The Welfare State in India: From Segmented Approach to Systems Approach in Social Protection" में, भारत में कल्याणकारी राज्य का परिचय दिया गया है। विभिन्न कार्यक्रमों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रदान किया गया है, साथ ही साथ सामाजिक सुरक्षा के लिए विभिन्न दृष्टिकोण से उत्पन्न चुनौतियां, जिसमें आपातकालीन प्रक्रिया में बाधक और सामाजिक सुरक्षा के लिए एक प्रणालीगत दृष्टिकोण पर विचार करने के लिए कुछ सुधार शामिल किए गए है।

**दुबे और नटानी (2021)** प्रस्तुत लेख "Pandemic and the Anecdote of India's Welfare State" में कोविड - 19 जैसी महामारी एवं भारत के कल्याणकारी स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस प्रकार विवरणात्मक एवं तुलनात्मक विधियों का प्रयोग कर लेखक तर्क देता है कि लॉकडाउन के सभी चार चरणों के दौरान कुल 198 श्रमिकों की मृत्यु हो गई।अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) और एशियाई विकास बैंक (ADB) की रिपोर्ट के अनुसार महामारी के कारण 41 लाख भारतीय युवा बेरोजगार हो गए।ह्यूमन राइट्स वॉच ने बताया कि 1.5 अरब से अधिक छात्र स्कूल से बाहर हो गए है। इस व्यापक मानवीय, सामाजिक और आर्थिक आपदा में एक व्यापक विश्वास निहित है, कि राज्य का कल्याण व्यय ना केवल सर्वोपरि है बल्कि अनिवार्य भी। प्रस्तुत लेख इस विषय पर विचार करता है कि किस प्रकार भारतीय कल्याणकारी राज्य इसे सुनिश्चित करने में विफल रहा है।

**चौधरी (2021)** लेखक अपने शोध पत्र "Welfare State in Kautilya's Arthashastra: An Analytical Study" में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कल्याणकारी राज्य के विचार से अवगत कराने का प्रयत्न किया है।जो प्राचीन भारत की राजनीति से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथ है। कौटिल्य द्वारा अर्थशास्त्र को शासन की एक विधि के रूप में लिखा गया था यद्यपि प्राचीन भारत में सरकार के प्रमुख प्रकार के रूप में राजतंत्र था फिर भी उस समय कल्याणकारी राज्य की अवधारणा विद्यमान थी। कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को धर्मशास्त्रों और अर्थशास्त्र द्वारा राजनीतिक विचार से जोड़ा गया है। कौटिल्य के अनुसार प्रजा के हित में राजा का हित है यह विचार कल्याणकारी राज्य की अवधारणा से ही संबंधित है।

**लस्कर (?)** विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक प्रस्तुत शोध पत्र "Kautilya and the Idea of Welfare State" में प्राचीन भारतीय कल्याणकारी व्यवस्था का अध्ययन कौटिल्य के दृष्टिकोण से करता है।आधुनिक कल्याणकारी राज्य के विपरीत जो पश्चिम में औद्योगिक विकास और प्रथम विश्व युद्ध के बाद की स्थिति और भारत में औपनिवेशिक स्थिति के बाद की स्थिति के प्रतिउत्तर में विकसित हुआ 'योगक्षेम' कि कौटिल्य अवधारणा नागरिकों का कल्याण किसी क्रांति या युद्ध के परिणामस्वरुप विकसित नहीं हुआ।इसके विपरीत यह विचार सुशासन की व्यवहारिक चिंताओं का परिणाम था। कौटिल्य की अवधारणा अपने प्रकृति में समग्र थी जिसने कल्याण की सामाजिक जिम्मेदारी केवल व्यक्ति या समाज के लिए बल्कि संपूर्ण मानवता, प्रकृति, ब्रह्मांड के लिए थी। इस प्रकार कौटिल्य ने कल्याण को व्यक्ति के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक यहां तक कि आध्यात्मिक जीवन पर एक प्रभावी भूमिका निभाने वाली व्यवस्था के रूप में एकीकृत किया।

**बैकहाउस, बेटमैन, निशिजावा, प्लेह्वे (2017)** प्रस्तुत लेख "Liberalism and the Welfare State: Economists and Arguments for the Welfare State" में लेखकों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि पिछले कई दशकों के दौरान कल्याणकारी राज्य विश्व भर में बढ़ते दबाव में आ गया है। सामाजिक प्रावधानों में अक्सर नियंत्रण या निजीकरण किया जा रहा है। अधिकांश इन परिवर्तनों का औचित्य एक आर्थिक तर्क के रूप में दिया जाता है, विशेष रूप से एक नव उदारवादी तर्क के रुप में, और कहा गया कि कल्याणकारी राज्य विकास को कम करता है या कम करने के लिए निरुत्साहित करता है। यह पुस्तक आर्थिक तर्कों का विश्लेषण करती है जो यूनाइटेड किंग्डम, जापान, जर्मनी में

कल्याणकारी राज्य के समर्थन और विरोध में उपयोग किए गए हैं।

**स्क्रम के. (2019)** तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग कर लेखक ने प्रस्तुत लेख "Neoliberal Relations of Poverty and the Welfare State" में गरीबी, कल्याणकारी राज्य एवं नव उदारवाद के पारस्परिक संबंधों को प्रस्तुत किया है। लेखक का तर्क है कि गरीबी का अध्ययन करते समय व्यक्तिगत कारक जैसे व्यक्ति की पृष्ठभूमि, मनोविज्ञान, व्यवहार आदि को महत्व दिया जाता है, जो कि एक व्यक्तिवादी अवधारणा है। आज इस अवधारणा में परिवर्तन की आवश्यकता है। गरीबी की अवधारणा को संबंधपरक दृष्टि से देखा जाए। व्यक्तिगत कारकों के अतिरिक्त अन्य कारक विशेष रूप से बाजार अर्थव्यवस्था में उन कारकों की खोज की जाए जो गरीबी, कल्याणकारी राज्य एवं नवउदारवाद से संबंधित है।

**रॉदरमुंड (1993)** लेखक अपनी कृति "An Economic History of India: From Pre-colonial Times to 1991" में आर्थिक इतिहास को एक सतत प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया है एवं कृषि, उद्योग, मुद्रा के विकास को एक राजनीतिक और ऐतिहासिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक में प्रस्तुत पुस्तक में एशियाई आर्थिक इतिहास एवं आर्थिक विकास की भी संक्षिप्त एवं त्वरित रूप में व्याख्या की है।

**जोशी एवं लिटिल (1998)** व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग कर लेखक ने अपनी कृति "India's Economic Reforms: 1991-2001" में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों का विश्लेषण किया है और अर्थव्यवस्था को उदार बनाने के विभिन्न सुझाव दिये। साथ ही साथ आर्थिक सिद्धांत और ज्ञान के उपयोग के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या प्रस्तुत की। लेखक आर्थिक सुधारों के साथ - साथ भविष्य की संभावनाओं की भी परिचर्चा करता है और संभावित विकास के लिए कौन-कौन से क्षेत्र प्राथमिक होंगे इनकी भी परिचर्चा की गई है।

**नवारो (1998)** इस लेख "New Liberalism Globalisation Unemployment Inequalities and the Welfare State" में नव उदारवाद और इसके आर्थिक, सामाजिक परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में आर्थिक विकास, मुद्रास्फीति, व्यापार लाभ, व्यापार निवेश, बेरोजगारी पर उदारवादी सार्वजनिक नीतियों के प्रभाव की परिचर्चा की गई है। लेखक ने तर्क दिया कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था नियोजित नवउदारवाद के परिणामस्वरूप

अत्याधिक कुशल एवं यूरोपीय संघ की अर्थव्यवस्था कल्याणकारी होने के कारण गतिहीन है, यह विचार निरर्थक है।

**जेनकिंस (1999)** विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन विधियों का प्रयोग करते हुए लेखक ने अपनी कृति डेमोक्रेटिक पॉलिटिक्स एंड इकोनॉमिक रिफॉर्म इन इंडिया में लोकतंत्र और आर्थिक उदारीकरण के बीच संबंधों की एक सुविचारित, सुलभ व्याख्या की है। पुस्तक विस्तार से भारत में आर्थिक सुधारों के विकास की बुनियाद का पता लगाती है। लेखक ने 1990 के दशक के आर्थिक सुधारों का राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा इसका भी विवेचन किया है।

**वेंट (2000)** विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग कर लेखक ने अपनी रचना "Globalization: Neoliberal Challenge, Radical Responses" में यह तर्क दिया कि वैश्वीकरण उतनी तीव्रता से आगे नहीं बढ़ रहा जितना कई लोग हमें विश्वास दिलाते हैं। दूसरी तरफ लेखक कहते हैं कि यह एक मिथ्या है कि वैश्वीकरण पूरी तरह से नई घटना है और एक अपरिहार्य प्रक्रिया। वेंट वैश्वीकरण को उसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखते है। वह दिखते है कि विस्तार के बाद के युग में लौटने का कोई विकल्प नहीं है लेकिन वर्तमान प्रवृत्ति को बदलना होगा अन्यथा अधिक सामाजिक असमानता, मजदूरी का निम्न स्तर, काम एवं जीवन की परिस्थिति अधिक घातक हो जायेगी।

**स्टिग्लिटज एवं यूसुफ (2001)** यह पुस्तक 1993 से विल क्लिटन के आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष और 1997 में विश्व बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री के रूप में स्टिग्लिटज के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है। विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक विधि का प्रयोग कर लेखक तर्क देता है कि IMF द्वारा अपनाई गई नीतियां नवउदारवादी मान्यताओं पर आधारित है, जो मौलिक रूप से सही नहीं है। लेखक द्वारा निम्नलिखित व्यवस्थाओं की आलोचना की गई। उच्च ब्याज दर, व्यापार उदारीकरण, निजी बाजार का उदारीकरण और राज्य संपत्ति का निजीकरण आदि।

**डुग्गन (2003)** विवरणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक तर्क देते है कि पिछले 30 वर्षों के दौरान और विशेष रूप से पिछले दशक के दौरान हुए धन के आश्चर्यपूर्ण पुनर्वितरण के विषय में अवगत हुआ है। लेकिन इस प्रकार के आर्थिक परिवर्तन शुन्य में नहीं होते वे हमेशा राजनीति से जुड़े रहते है। लेखक ने कहा की कैसे नवउदारवादी लक्ष्य का पीछा किया गया है और यह दर्शाता है कि पहचान की राजनीति और आर्थिक नीति,सांस्कृतिक नीति और राज्य के मामलों को अलग करने वाले प्रगतिशील तर्क विफल हो सकते हैं। लेकिन डुग्गन का तर्क है कि नवउदारवाद की सबसे

घातक विशेषता (सेक्स, हिंसा और अमेरिकी आधुनिकता), इसका बहुसांस्कृतिक तटस्थता का दावा है, जिसका उद्देश्य पूंजीवाद की "प्राकृतिक" प्रक्रियाओं को वर्ग, नस्ल और पहचान के मुद्दों से अलग करना है। उदाहरण के लिए, राष्ट्रपति क्लिंटन ने सार्वजनिक रूप से नस्लवाद - विरोधी, समावेशी नीति का समर्थन किया, साथ ही NAFTA - कानून को आगे बढ़ाया, जो डुग्गन के अनुसार, वैश्विक पूंजीवाद की अंतर्निहित नस्लवादी, वर्गवादी संरचनाओं को बढ़ावा देता था। डुग्गन का तर्कसंगत तर्क यह है कि सच्चा प्रगतिशील परिवर्तन भागों में नहीं बल्कि एकीकृत संपूर्ण रूप में होना चाहिए। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक असमानता के व्यापक संदर्भ की अनदेखी में **नहीं हैं।**

**स्टीगर (2003)** लेखक के अनुसार वैश्वीकरण हमारे समय का एक परिभाषित शब्द बन गया है, एक ऐसा शब्द जो विभिन्न प्रकार की त्वरित आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक वैचारिक और पर्यावरणीय प्रक्रियाओं का वर्णन करता है, जो दुनिया के हमारे अनुभव को तेजी से बदल रहा है। सामाजिक जीवन के वैश्विक, क्षेत्रीय और स्थानीय पहलुओं को शामिल करने वाली एक बहुमुखी प्रक्रिया के रूप में वैश्वीकरण को सुलभ भाषा में प्रस्तुत करते हुए स्टिगर इसके कारकों, प्रभावों को देखते है और इनका विश्लेषण करते है। यह लेख आर्थिक वैश्विकरण पर चर्चा करते हुए तर्क देता है की आर्थिक वैश्वीकरण का तात्पर्य दुनिया भर में आर्थिक संबंधों की गहनता और विस्तार से है। द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में, ब्रेटन वुड्स सम्मेलन ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाओं की नींव रखी। 1980 के दशक में, बढ़ते नवउदारवाद के कारण वित्तीय लेनदेन को नियंत्रणमुक्त कर दिया गया। महत्वपूर्ण विकासों में व्यापार का अंतर्राष्ट्रीयकरण, अंतरराष्ट्रीय निगमों की बढ़ती शक्ति और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों की बढ़ी हुई भूमिका शामिल हैं। साथ ही साथ यह लेख वैश्वीकरण के अन्य आयामों की भी परिचर्चा करता है

**कीली (2005)** यह पुस्तक "Empire in the age of Globalisation: US Hegemony and Neo-Liberal Disorder" अमेरिकी अधिपत्य और समकालीन वैश्वीकरण के बीच संबंधों का परीक्षण करती है। कीली ने वैश्वीकरण सिद्धांत के दोष को उजागर किया और तर्क दिया कि हम वैश्वीकरण को पूंजीवाद,साम्राज्यवाद,नवउदारवाद और सार्वभौमिक मानव अधिकारों पर बहस से जोड़कर ही समकालीन विश्व व्यवस्था को उचित रुप से समझ सकते हैं।

**हार्वे (2007)** प्रस्तुत लेख "A Brief History of Neoliberalism" में लेखक ने व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग कर यह

बताया कि, राजनीतिक - आर्थिक कहानी क्या है? नवउदारवाद का आस्तित्व कहां से आया? और यह विश्व मंच पर कैसे प्रसारित हुआ। यह लेख नवउदारवादी सिद्धांत की कई प्रमुख विशेषताओं का एक गैर-तकनीकी संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करता है। यह आर्थिक प्रभावों का प्रस्ताव है कि राज्य के हस्तक्षेप को कम करके मुक्त बाजारों को बढ़ावा देकर और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिकतम करके मानव कल्याण प्राप्त किया जा सकता है। सिद्धांत के अनुसार, नवउदारवादी राज्य को  व्यक्तिगत संपत्ति अधिकारों, कानून के शासन और स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले बाजारों और मुक्त व्यापार की संस्थाओं का समर्थन करना चाहिए। ये संस्थागत व्यवस्थाएं हैं जिन्हें व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी के लिए आवश्यक माना जाता है।

**टर्नर (2007)** "Rebirth of Liberalism the Origin of Neo Liberal Ideology" में लेखक ने बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के दौरान पश्चिमी दुनिया में नव उदारवादी विचारधारा की उत्पत्ति का विश्लेषण करता है। विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग कर लेखक तर्क देता है कि नव उदारवाद का उद्भव शास्त्रीय आर्थिक उदारवाद का सामान्य पुनरुद्धार नहीं था और 19वीं सदी के मुक्त व्यापार, एक न्यूनतम राज्य और स्वयं सहायता के विचारों की वापसी थी। यह लेख उदार और उदारवाद शब्द का प्रयोग नव उदारवादी अभिव्यक्ति के रूप में करता है।

**मॉस-होम्स (2021)** व्याख्यात्मक, तुलनात्मक विधियों का प्रयोग कर लेखक प्रस्तुत लेख "Now is the time! Confronting Neo-Liberalism In Early Childhood" में यह तर्क देता है कि पिछले 30 वर्षों के अन्तर्गत जीवन के अन्य सभी पहलुओं की तरह नव उदारवाद बाल्यवस्था को भी प्रभावित करता है। प्रस्तुत लेख नव उदारवाद क्या है, इसका परिचय देते हुए यह लेख बाजार, कल्पनाओं और शासन सहित प्रारंभिक बाल्यवस्था की शिक्षा और देखभाल पर इसके कुछ प्रभावों का अध्ययन करता है। यह तर्क देता है कि यद्यपि नव उदारवाद एक शक्तिशाली अवधारणा है, यह प्रतिरोधी और प्रतिस्थापन योग्य हैं अब समय आ गया है कि उपस्थित नीतियों के विकल्पों को विकसित किया जाए, उन्हें नव उदारवाद के विरोधी विचारों पर आधारित किया जाए।

**अग्रवाल (2014)** यह लेख "The Effects of Liberalization on the Indian Economy: A Labour Force Perspective" भारतीय अर्थव्यवस्था पर उदारीकरण के प्रभाव से संबंधित है।जिसमें लेखक ने प्रमुख रूप से दो उद्देश्य का अध्ययन किया है 1-उपयुक्त कारणों के संबंध में उदारीकरण से पहले और बाद के युग में भारतीय श्रम की

स्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन 2- भारतीय कार्यबल पर उदारीकरण के प्रभाव के संबंध में भारत सरकार और प्रसिद्ध लेखकों द्वारा किए गए दावों का परीक्षण।तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि 1991 में आर्थिक सुधारों की शुरुआत के कारण भारतीय श्रमिकों की मानसिकता और स्थितियों दोनों में भारी बदलाव आए हैं। इससे सरकार और व्यवसाय ने कल्याण, सामाजिक सुरक्षा और श्रम लचीलेपन जैसे मुद्दों को संबोधित किया है जो पहले उपेक्षित थे। अनुभवजन्य अध्ययन के लिए सर्वेक्षण, साक्षात्कार और माध्यमिक विश्लेषण किए गए, और परिणामों से स्पष्ट रूप से पता चला कि आर्थिक उदारीकरण के बाद मजदूरी के संबंध में भारतीय श्रमिकों की स्थिति में सुधार हुआ है। हालाँकि, उत्तरदाताओं द्वारा श्रम कल्याण, सामाजिक सुरक्षा, रोजगार वृद्धि, मानव संसाधन विकास और प्रबंधन और ट्रेड यूनियन सदस्यता के संबंध में निराशा व्यक्त की गई थी।

**अमदी (2020)** प्रस्तुत लेख "Globalization and the Changing Liberal International Order: A Review of the Literature" वैश्वीकरण और परिवर्तित उदार अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था से संबंधित एक लेख है। विवरणात्मक एवं तुलनात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक प्रस्तुत लेख में यूरोप और अमेरिका का अध्ययन कर यह बताता है कि उदार अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का उदय कब हुआ? उदार अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और वैश्वीकरण के बीच क्या सहसंबंध है? वैश्वीकरण और परिवर्तित उदार अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के बीच क्या विरोधाभास है?

**प्रसाद (2021)** विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए लेखक अपने लेख "The Importance of LPG Reforms of 1991 and its Underlying Controversy" में विभिन्न प्रश्नों पर विचार करते हैं, एलपीजी से पहले की यथास्थिति सार्वजनिक क्षेत्र राष्ट्र के विकास को बढ़ावा देने में अक्षम क्यों थी? एलपीजी के पीछे दर्शन एवं आवश्यकता क्या थी? जब एलपीजी सुधार आया तो देश ने क्या नैतिक बदलाव देखे।

**कुस (2006)** लेखक द्वारा प्रस्तुत लेख "Neoliberalism, Institutional Change and the Welfare State the case of Britain And France" में तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए यह विचार प्रतिपादित किया कि ब्रिटेन एवं फ्रांस में 1970 के दशक में हुए आर्थिक संकट के साथ नवउदारवाद की ओर संक्रमण हुआ। यद्यपि दोनों देशों के द्वारा अपने - अपने देश की समस्याओं के निदान हेतु भिन्न - भिन्न मार्गो का अनुसरण किया गया। इस प्रकार

नवउदारवाद की नीतिगत अभिव्यक्ति प्रत्येक में भिन्न रही। ब्रिटेन में जहां केनेसियनवाद के संकट का निदान किया गया वहीं फ्रांस में अर्थव्यवस्था के नवउदारवादी पुनर्गठन ने औद्योगिक नीति पर ध्यान केंद्रित किया।

**पिवेन (2015)** प्रस्तुत लेख यूके सोशल पॉलिसी एसोसिएशन वार्षिक सम्मेलन 8 जुलाई 2014 में दिए गए एक व्याख्यान से संबंधित है। जिसका शीर्षक "Neoliberalism and the Welfare State Plenary Lecture" है। जिसके अंतर्गत कल्याणकारी राज्य के बीच उभरते संघर्षों की परिचर्चा की गई। प्रस्तुत लेख में अर्थव्यवस्था में हुए परिवर्तन के लिए निम्नलिखित कारकों को उत्तरदायी माना है जो इस प्रकार है सरकारी नीतियों की अस्पष्टता, प्राय: बढ़ती आर्थिक असमानता एवं संस्थागत परिवर्तन और यही सब कारक कल्याणकारी राज्य की नीतियों को दुर्बल करने, मजदूरी में गिरावट, श्रमिक अधिकारों को वापस लेने सहित असमानता की ओर ले जाते है। लेखक के अनुसार नव उदारवादी विचाराधारा जिसे हम वर्तमान में अति पूंजीवाद या अति प्रतिस्पर्धी पूंजीवाद के रूप में व्यक्त कर सकते है यह उपयुक्त समस्याओं का कारण है।

**उद्देश्य**

1. भारत में कल्याणकारी राज्य एवं नव उदारवाद की अवधारणा का सैद्धांतिक विवेचन करना।
2. अंत्योदय वर्ग के उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित लोक कल्याणकारी योजनाओं का अंत्योदय वर्ग पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
4. राजनीतिक जागरूकता पर नव उदारवाद के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. निजीकरण के परिपेक्ष्य में जनमत के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

**परिकल्पना**

1. अंत्योदय वर्ग के व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, स्थिति का स्तर निम्न है।
2. भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित लोक कल्याणकारी योजनाओं ने अंत्योदय वर्ग के जीवन शैली को सुगम बनाया है।
3. नव उदारवाद की विचारधारा ने राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि की है।

4. निजीकरण के परिपेक्ष्य में जनमत का दृष्टिकोण नकारात्मक है।

**शोध पद्धति**

- **शोध प्रारचना -** प्रस्तुत अध्ययन में विवरणात्मक , विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक शोध पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।
- **प्रस्तावित अध्ययन क्षेत्र -** प्रस्तावित अध्ययन क्षेत्र के रूप में मथुरा जनपद के कुल 10 खण्ड में से 3 खण्ड का अध्ययन किया जाएगा।
- **अध्ययन का समग्र -** प्रस्तुत शोध प्रस्ताविका में समग्र के रूप में मथुरा जनपद के कुल 10 खण्ड हैं जिनमें अंत्योदय की संख्या 33678 का चयन किया गया है।

**तालिका द्वारा स्पष्टीकरण इस प्रकार है-**

| **क्रम संख्या** | **ब्लाक का नाम** | **अंत्योदय वर्ग की संख्या** |
|---|---|---|
| 1 | BALDEO | 3072 |
| 2 | CHHATA | 3403 |
| 3 | CHOUMUNHA | 2354 |
| 4 | GOVARDHAN | 1790 |
| 5 | MAT | 3855 |
| 6 | MATHURA | 5302 |
| 7 | NANDGAON | 2156 |
| 8 | NAUJHIL | 4691 |
| 9 | PHARAH | 2742 |
| 10 | RAYA | 4313 |
| कुल योग | | 33678 |

- **प्रतिदर्श -** दैव बहुस्तरीय निदर्शन विधि के आधार पर सर्वप्रथम प्रत्येक चतुर्थ खंड का चयन किया जाएगा जिसका आधार आरोही क्रम होगा। इस प्रकार बलदेव, मांट, फरह का चयन किया गया है एवं चयनित खंड में से समस्त अंत्योदय राशन कार्ड धारक अध्ययन की इकाई के रूप में चयनित किए जाएंगे, जिनकी कुल जनसंख्या 9669 है। कुल जनसंख्या 9669 का 5% 484 है जो वास्तविक अध्ययन के रूप में चयनित

किये जाएंगे।

**तालिका द्वारा स्पष्टीकरण इस प्रकार है -**

| क्रम संख्या | ब्लाक का नाम | अंत्योदय वर्ग की संख्या |
|---|---|---|
| 1 | BALDEO | 3072 |
| 2 | MAT | 3855 |
| 3 | PHARAH | 2742 |
| कुल योग | | 9669 |
| | | 9669×0.05 = 483.45 (484) वास्तविक अध्ययन के रूप में चयनित इकाई |

- **तथ्य संकलन के स्रोत -** प्रस्तावित अनुसंधान में तथ्य संग्रह हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया जाएगा। **प्राथमिक स्रोत -** प्राथमिक स्त्रोतों के अंतर्गत तथ्यों के एकत्रीकरण हेतु साक्षात्कार, अनुसूची, सरकारी दस्तावेज का प्रयोग किया जाएगा। **द्वितीयक स्रोत -** द्वितीयक स्रोत के अन्त: वस्तु विश्लेषण पुस्तकों, पत्रिकाओं, शोध लेखों, समाचार पत्रों और इंटरनेट स्त्रोतों के माध्यम से एकत्र किया जाएगा।
- **सांख्यिकीय विश्लेषण / उपकरण -** प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों सारणीयन तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि के द्वारा किया जायेगा। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप, काई-स्क्वायर, मानक विचलन, सहसंबंध का प्रयोग किया जायेगा।

**अध्ययन का महत्व**

वर्तमान में लोक कल्याणकारी राज्य की धारणा राज्य के कार्य संचालन का सर्वमान्य सिद्धान्त बन गया है। सभी देश प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से इसे स्वीकार करते हैं और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। संघ एवं प्रांतीय सरकारों द्वारा विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से लोक कल्याणकारी स्वरूप को मूर्त रूप देने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। विगत कुछ दर्शकों में भारत की अर्थव्यवस्था, विज्ञान तकनीक, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को प्रभावित करने की उसकी क्षमता और सुरक्षा व क्षेत्रीय अखंडता को सुनिश्चित करने की उसकी शक्ति लगातार बढ़ रही है। आज भारत एक उभरती अर्थव्यवस्था के रूप में हम सभी के समक्ष प्रस्तुत है। इस सशक्तिकरण का एक प्रमुख कारण भारत

द्वारा नवउदारवादी नीतियों का अनुसरण है। नवउदारवादी नीतियों के अनुसरण के द्वारा भारत को एक आर्थिक स्थिरता प्राप्त हुई है, परन्तु भारत जैसे विषमता पूर्ण देश में नवउदारवादी नीतियों को पूर्ण रूप में लागू करना संभव नहीं है। इस प्रकार भारत में कल्याणवाद एवं विकासवाद एक प्रमुख विवाद का विषय है। इस प्रकार इस अध्ययन का प्रमुख महत्व उस प्रणाली, व्यवस्था, कारकों की खोज कर उस समन्वित व्यवस्था की खोज करना है जिसमें कल्याणकारी राज्य एवं नव उदारवादी व्यवस्था के गुण निहित हो। इस शोध का महत्व कल्याणकारी राज्य एवं नवउदारवाद के क्षेत्र में किये जाने वाले अध्ययन के लिये महत्वपूर्ण होगा। साथ ही यह अनुसंधान क्षेत्रीय गतिशीलता के अध्ययन में भी सार्थक सिद्ध होगा। इस दृष्टिकोण से यह अध्ययन इस क्षेत्र से सम्बंधित आगामी शोध कार्यों एवं नीति निर्माताओं, शोधार्थियों इत्यादि के लिए लाभकारी एवं उपयोगी होगा।

**प्रस्तावित अध्यायीकरण**

**प्रथम अध्याय**

- प्रस्तावना
- सैद्धांतिक पृष्ठभूमि
- समस्या कथन
- साहित्यिक पुनरावलोकन
- अध्ययन के उद्देश्य
- परिकल्पना
- शोध पद्धति
- अध्ययन का महत्व

**द्वितीय अध्याय**

- भारत में कल्याणकारी राज्य एवं नव उदारवाद की अवधारणा का सैद्धांतिक विवेचन

**तृतीय अध्याय**

- अंत्योदय वर्ग की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रस्थिति

**चतुर्थ अध्याय**

- कल्याणकारी योजनाओं का अंत्योदय वर्ग पर प्रभाव

**पंचम अध्याय**

- राजनीतिक जागरूकता पर नव उदारवाद का प्रभाव

**षष्टम अध्याय**

- निजीकरण के परिपेक्ष्य में जनमत का दृष्टिकोण

**सप्तम अध्याय**

- निष्कर्ष एवं सुझाव

**सन्दर्भ ग्रन्थ**

**BOOKS:**


❖ Barr, N. (2012). Economics of welfare state. London: Oxford University press.

❖ Berlin, I. (1958). Two Concepts of Liberty. London: University of Oxford.

❖ Backhouse, E. R., Bateman, W. Bradley., Nishizawa, Tamotsu., & Plehwe, Dieter. (2017). Liberalism and the welfare state: economists and arguments for the welfare state. London: Oxford University press.

❖ Bhargav, R., & Aacharya, A. (2011). Political Theory: An Introduction. New Delhi: Dowling Kindersley (India) Pvt. Ltd. Pearson Education.

❖ Ball, T., Dagger, R., & Oneill, D. (2014). Political ideologies and the democratic ideal. New York: Pearson

❖ Bellamy, R., & Mason, A. (2003). Political concepts. Manchester Univ. Pr.

❖ Cudworth, E., Timothy., & McGovern, J. (2007). The modern state theories and ideologies. Edinburgh University press.

❖ Dadhich, N. (2015). Contemporary Political Theory: An Introduction. Jaipur: Rawat Publication.

❖ Datt, G., & Mahajan, A. (2016). Indian Economy. S. chand publishing, A division of S. chand & company Pvt. Ltd.

❖ David, W. (2014). The limits of new liberalism: authority, sovereignty and the logic of Competition. Sage publication limited.

- Duggan, L. (2003). The twilight of equality? : Neoliberalism, cultural politics and the attack on democracy Boston. Boston: Beacon press
- Eatwell, R., & Wright, A. (2003). Contemporary political ideologies. Rawat publication.
- Friedman, M. (1962). Capitalism and freedom. University of Chicago press.
- Garland, D. (2016). The welfare state: a very short Introduction. Oxford University press.
- Gauba, O. P. (2018). An introduction to political thought. New Delhi: Mayur books.
- Gauba, O. P. (2018). Western political thinkers. New Delhi: Mayur books
- Gauba, O.P. (2018). Indian political thinkers. New Delhi: National paperbacks
- Gerhard, W. (2015). The legitimacy of the welfare state: religion-gender-neo liberalism. Leipzig Evangelische Verlagsanstalt.
- Harvey, D. (2007). A brief history of neoliberalism. London: Oxford University press.
- Heywood, A. (2007). Political ideologies and introduction. Palgrave Macmillan.
- Hoffman, J., & Graham,P. (2006). Introduction to political ideologies. New Delhi: Pearson education limited.
- Jenkins, R. (1999). Democratic politics and economic reform in India. (contemporary South Asia). Cambridge University press.
- Johri, J.C. (2007). Samkalin rajnitik Siddhant. Sterling Publishers Private Limited.
- Khanna, S. K. (1998). Political science major ideologies. Commonwealth publisher.
- Kiely, R. (2005). Empire in the age of globalisation: US hegemony and neo-liberal disorder. Pluto press.
- Laxmikant, M. (2019). Indian Polity. McGraw Hill Education (India) private limited.
- Losurdo, D. (2011). Liberalism: A Counter – History. New York: Verso London.
- Rothermund, D. (1993). An economic history of India: from Pre-colonial times to 1991. London: Routledge
- Sankhdher, M. M. (2003). Yogakshema: The Indian model of welfare state. Deep & deep publication private limited.
- Schram, f. S. (2019). Neoliberal relations of poverty and the welfare state. University of New York.

❖ Sharma, R. (2001). Aaj ke Sawal aur marksvad. Delhi: Swaraj prakashan

❖ Sharma, U., & Sharma, SK. (1997). Principles and theory of political science. New Delhi: Atlantic publisher & distributors private limited.

❖ Stiglitz, E. J., & Yusuf Shahid. (2001). Rethinking the East Asian Miracle Washington DC. London: World Bank and Oxford University press.

❖ Steger, B. M. (2003). Globalisation: A very short introduction. London: Oxford University press.

❖ Vincent, A. (2010). Modern political ideologies. Blackwell publishing Ltd.

❖ Went, R. (2000). Globalisation: neoliberal challenge, radical responses. Pluto press.

**JOURNAL AND ARTICLES**

❖ Agrawal, C. (2014). The Effects of Liberalization on the Indian Economy: A Labour Force Perspective. Sage journals Volume 38, Issue 4.

❖ Amadi, L. (2020). Globalization and the changing liberal international order: A review of the literature. Research in Globalization. Volume 2.

❖ Avlijas, S. (2018). Beyond neo liberalism? revisting the welfare state in the Baltic. The London of school of economics and political science.

❖ Bhalla, S. S. (2014). Dismantling the welfare state. https://www.livemint. Com.

❖ Chaudhry, A. S. (2021). Welfare State in Kautilya's Arthashastra: An Analytical Study. Maharshi Dayanand University Research Journal ARTS 2021, Vol. 20 (1).

❖ Das, R. J. (2015). Critical observation on Neo liberalism and India's new economic policy. journal of contemporary Asia,2015Vol.45,No.4,715-726.

❖ Dubey, S., & Natani, S. (2021). Pandemic and the Anecdote of India's Welfare State. GNLU Journal of Law & Economics.

❖ Duggirala, A., & Kumar, R. (2021). The Welfare State in India: From Segmented Approach to Systems Approach in Social Protection. Sage journals Volume 15, Issue 3.

❖ Favell, A. (2016). Liberalism not Neo-Liberalism: Comment on Will Kymlicka's article: Solidarity in Diverse Societies. Comparative Migration Studies Article number: 5 (2016).

❖ Gough, I., (2015). Theories of the welfare state: A critique. The London school of economics and political science.

- Garg, A. (2020). LPG Policy and Growth of Indian Economy. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)
- Gudipudi, H. (2018). The Transition of Laissez Faire to Welfare State and the Institutionalization of Rule of law- A Note. www.penacclaims.com, Volume 4.
- Joshi, V., & Little, M.D. (1998). India's Economic Reforms: 1991-2001. The Economic Journal Vol. 108, No. 446 Published By: Oxford University Press.
- Kus, B. (2006). Neoliberalism, institutional change and the welfare state the case of Britain and France. Sage journals.
- Laskar, N.H. (?). Kautilya and the Idea of Welfare State. Journal of Xi'an Shiyou University, Natural Science Edition, VOLUME 16 ISSUE 9.
- Lefebvre, A. (2022). Liberalism and the Good Life. Journal of Social and Political Philosophy Volume 1, Issue 2.
- Lee, M., & Stephanie. (2008). What is neo-libealism?. Social economic review volume 6.
- Lindbeck, A. (2006). The welfare state Background, Achievements, Problems. Research Institute of Industrial Economics.
- Moss, P., & Holmes, G.R. (2021). Holmes(2021)Now is the time! Confronting neo-liberalism in Early childhood. Sage journals Volume 23, Issue 1.
- Navarro, V. (1998). New liberalism globalisation unemployment inequalities and the welfare state. International Journal of Health Services Vol. 28, No. 4 (1998), pp. 607-682 (76 pages Published By: Sage Publications, Inc.
- Prasad, A. (2021). The importance of LPG Reforms of 1991 and its underlying Controversy. Diploma in International Business Law from LawSikho.
- Piven. (2020). Neo-liberalism and the welfare state Plenary lecture, UK social policy association annual conference. Cambridge University press.
- Ramudamu, K. (2020). India's role as a welfare state in light of novel corona virus pandermic. Indian journal of law polity and administration.
- Shukla, U. (2020). India as a Welfare State https://www.intolegalworld.com/article.
- Swaraj, A. (2020). The Normative Value of Ramayana in Contemporary Public Policy and

Administration. International Journal of Integrated Law Review.

- Suthar, C. (2022). Globalisation and human rights. Bhartiya rajniti vigyan shodh patrika.
- Thorsen, D. E., & Lei, A. (?). What is neo-libealism?. Department of political science University of Oslo.
- Turner, M.S. (2007). Rebirth of liberalism the origin of neo liberal ideology. journal of political ideology.
- Whiteside, N. (2014). The beverage report and its implications: a revolutionary project. https://www.cairn.info/revue-histoire-politique-2014-3-page-24.htm.

**Website**

- https://navbharattimes.indiatimes.com/business/business-news/doing-business-is-not-the-work-of-the-government-psus-will-be-restricted-to-the-strategic-sector/articleshow/81192446.cms, accessed on March 13, 2023 at 12.39 PM
- Economic times. https://journalsofindia.com/lpg-reforms-in-india/. 2019.accessed on February 18, 2023 at 2.45 PM
- https://fcs.up.gov.in/